National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 594-596

भारत में अध्यापक – शिक्षा : समस्याएँ एवं समाधान

डॉ. एस.के महतो
प्राचार्य, ठा. दुर्गपाल सिंह मेमोरियल बी.एड. कॉलेज, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

देश के सर्वांगीण एवं बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा की परम आवश्यकता है और अच्छी शिक्षा के लिए योग्य शिक्षकों की। योग्य शिक्षकों के लिए उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था की जरूरत है जो किसी उत्तम कोटि के शिक्षण संस्थान में ही सम्भव है। उत्तम कोटि के अध्यापक के द्वारा ही देश की भावी पीढ़ी (बालक) के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। सभी शिक्षक जन्मजात कुशल नहीं होते अतः शिक्षण कला में दक्षता एवं पूर्णता हेतु प्रशिक्षण आवश्यक है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् बड़े पैमाने पर कुशल एवं योग्य शिक्षकों की कमी को पूरा करने के लिए अध्यापक शिक्षा संस्थान स्थापित किये गये हैं। जहाँ भावी शिक्षकों का निर्माण किया जाता है। अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को कायम रखने के लिए विभिन्न शिक्षा आयोगों ने अपनी संस्तुतियाँ प्रस्तुत की है।

स्वायत्त संस्था के रूप में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद ने 1993 से अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता को बरकरार रखने के लिए कार्यरत रही है, बावजूद इसके वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (प्रशिक्षण) में अनेकों दोष विद्यमान हैं।

वर्तमान अध्यापक शिखा की समस्याएँ

भारत में समय–समय पर गठिन आयोगों यथा–विश्वविद्यालय शिक्षा नीति आयोग (1948), शिक्षा आयोग (1952–53), शिक्षा आयोग (1964–65) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के द्वारा अध्यापक–शिक्षा की खामियों का उल्लेख किये जाने के बावजूद भी स्थिति में आशानुरूप परिवर्तन नहीं हो सका है, जैसा कि 'शिक्षा की चुनौतियाँ एक नीति संदेश (1985) नामक दस्तावेज में कहा गया है कि अध्यापक शिक्षा भारत में नियोजित एवं संगठित नहीं है। अध्यापक शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं :–

सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक अध्ययन के पाठ्यक्रम में कृत्रिमता

विभिन्न स्तरों पर अध्यापक–शिक्षा पाठ्यक्रम एवं आदर्श अति प्राचीन है। योग्य एवं प्रभावशाली अध्यापक उत्पन्न करने के लिए उचित विषयवस्तु नहीं है। विशेष विषय में सैद्धान्तिक पाठय विषयों का प्रयोगात्मक कार्य से कोई स्पष्ट सम्बन्ध नहीं है। विषय विषयों पर उचित दृष्टिपात नहीं किया जाता है तथा पाठ्य निर्माण का तथ्यात्मक आधार नहीं है।

अप्रभावपूर्ण शिक्षण विधियाँ

भारत वर्ष में अध्यापक शिक्षा शिक्षण विधियों में अन्वेषण एवं प्रयोग बहुत कम (अत्यल्प) है। वे परम्परागत शिक्षण विधियों के प्रति निष्ठावान है तथा उनकी आधुनिक कक्षा व्यवहार के तरीकों से परिचित नहीं है। जिसके कारण छात्र अध्यापक शिक्षण विधियों का सरलता एवं दक्षता के साथ प्रयोग नहीं कर पाते हैं और अप्रभावी शिक्षण के शिकार हो जाते हैं।

व्यावसायिक वृत्ति के विकास पर न्यूनतम ध्यान

सम्पूर्ण अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम इस प्रकार नियोजित किये जाते हैं कि, व्यावसायिक वृत्ति के विकास पर न्यूनतम ध्यान दिया जाता है, जो श्रेष्ठ अध्यापक–शिक्षा के कार्यक्रम के लिए दुर्भाग्य का विषय है। प्रदेश के सम्पूर्ण शिक्षण संस्थानों में, अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रमों की एकरूपता के विषय में, संशय बना रहता है। संसाधन के अभाव में सम्पूर्ण कार्यक्रम नियोजित तरीके से संचालित नहीं हो पाते। फलस्वरूप अध्यापक–शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के कारण योग्य शिक्षकों का निर्माण नहीं हो पाता है।

शिक्षण अभ्यास पर बल नहीं

शिक्षा आयोग के अनुसार अध्यापक शिक्षा प्राथमिक एवं माध्यमिक दोनों स्तरों पर विद्यालय एवं विद्यालयी शिक्षा के नवीन विकास से अलग–थलग हो गयी है। विद्यालयों में अपनाई गई शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम एवं अन्य आवश्यकताएँ अध्यापक–शिक्षा विभागों द्वारा समर्पित एवं वास्तविक आवश्यकताओं से अलग है। आज शिक्षण अभ्यास विद्यालयों में एक दिखावा मात्र बनकर रह गया है। शिक्षण अभ्यास के लिए न तो छात्र अध्यापक को पूर्ण तैयारी करायी जाती है और नही उनमें शिक्षण कौशलों एवं दक्षताओं का विकास किया जाता है।

छात्र अध्यापकों की दुर्बल शैक्षिक आधार

वर्तमान समय में अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश के लिए जो प्रक्रिया अपनाई जाती है उसमें पारदर्शिता का अभाव परिलक्षित होता है। वर्तमान प्रवेश प्रक्रिया के अन्तर्गत स्त्रातक/परास्त्रातक उत्तीर्ण अभ्यार्थियों के लिए 45 प्रतिशत न्यूनतम अंक निर्धारित है तदुपरान्त ही वह प्रवेश परीक्षा के योग्य माना जा सकता है। किन्तु अभी–अभी जिन अभ्यार्थियों ने अध्यापक–शिक्षा में प्रवेश लिया है, उनके प्रवेश परीक्षा में 45 प्रतिशत अंकों की उपल धता को भी दरकिनार कर दिया गया है। यहाँ स्त्रातक या परास्त्रातक स्तर के अंकों की अवहेलना स्पष्ट दिखती है। ऐसी प्रक्रिया के अन्तर्गत कमजोर शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों का भी प्रवेश हो जाता है।

शिक्षण संस्थाओं में पर्याप्त सुविधाओं का अभाव

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्थान संबंधी मानक एवं सुविधाओं को भी गौण कर दिया गया है, जिसके अभाव में छात्र–अध्यापकों का प्रशिक्षण कमोवेश प्रभावित हो रहा है। आज 50 प्रतिशत शिक्षण संस्थाओं के पास प्रयोगशाला, पुस्तकालय, अभ्यास विद्यालय, उपकरणों, कक्षा–कक्ष तथा संतुलित पर्यावरण एवं पाठ्यक्र क्रियाओं के लिए जगहों की कमी देखी जा रही है। भला, उपर्युक्त सुविधाओं के अभाव में एक सर्वगुण सम्पन्न अध्यापक का निर्माण

कैसे हो सकता है ?

विषय विशेषज्ञ अध्यापकों की कमी

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् ने अध्यापक– शिक्षा की गुणवत्ता को बरकरार रखने के लिए जिन मापदण्डों के अन्तर्गत विषय विशेषज्ञ अध्यापकों की नियुक्ति सम्बन्धी निर्देश जारी किये थे, आज उसकी अवहेलना 80 प्रतिशत शिक्षण संस्थाओं में देखी जा सकती है। योग्य विषय विशेषज्ञों के अभाव में छात्र–अध्यापक को पर्याप्त शैक्षिक वातावरण नहीं मिल पाता है फलतः उनका आन्तरिक ज्ञान एवं क्षमता कुंठित होकर रह जाता है। ऐसे परिवेश में अध्यापक–शिक्षा एक मखौल बनकर रह गई है।

विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक संस्थानों में अन्तःक्रिया की कमी

विश्वविद्यालय के द्वारा शैक्षिक संस्थानों को सम्बद्धता प्रदान की जाती है तथा विश्वविद्यालय निर्मित पाठ्यक्रम के अनुसार अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं। महाविद्यालय को सम्बद्धता प्रदान करना, छात्र–अध्यापकों की परीक्षा आयोजित करना, परीक्षाफल प्रकाशित करना तथा उपाधि वितरण करना विश्वविद्यालय ने अपना कार्य समझ रखा है। इसके अलावा पाठ्यक्रम की गुणवत्ता का ध्यान रखना एवं योग्य एवं अर्हता प्राप्त अध्यापकों की नियुक्ति सम्बन्धी त्रुटियों पर ध्यान रखना आदि महत्वपूर्ण बिन्दुओं से विश्वविद्यालय ने अपना पल्ला झाड़ लिया है। इसके साथ–साथ किसी भी प्रकार का अध्यापक–शिक्षा से सम्बन्धित प्रायोजित कार्यक्रमों व सहयोग से वे दूर रहते हैं। फलतः अन्तःक्रिया के अभाव में शैक्षिक संस्थाएँ बेलगाम होती जा रही है।

अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में प्रयोगात्मक अनुसंधान की कमी

शिक्षा में अनुसंधान अपेक्षित है, इसके द्वारा नये आविष्कार एवं चिन्तन, मनन, सर्जन की क्षमताओं का विकास होता है। अध्यापक–शिख कार्यक्रम में अति अल्प अनुसंधान किये जाते है और जो किये जाते हैं उनका स्तर निम्न होता है। अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम को किसी व्यवस्थित अनुसंधान द्वारा उचित ढंग से करके नई खोजों पर बल दिया जाना चाहिए जो वर्तमान शैक्षिक संस्थाओं में नहीं दिखता। यहाँ पर यह कहना उक्ति संगत होगा कि योग्य प्रशिक्षक के अभाव में अन्वेषण कार्यो को वरीयता नहीं दी जा रही है।

नियोजन सम्बन्धी समस्याएँ

अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत जिन उद्देश्यनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ एवं निष्ठावान अध्यापकों का निर्माण किया जाता है, उनके नियोजन सम्बन्धी प्रक्रिया के लिए, सरकार की उदासीन नीति भी कम जिम्मेवार नहीं है। कठोर परिश्रम के पश्चात् योग्य शिक्षक नियोजन के अभाव में कुंठित हो जाता है और उसे अपने विद्वता को विकसित करने का मौका नहीं मिल पाता है।

अपर्याप्त वित्तीय प्रबन्ध

वर्तमान समय में जिस प्रकार शैक्षिक संस्थाओं का उद्भव हो रहा है तथा निजी संस्थाओं को सरकार द्वारा मान्यता दी जा रही है किन्तु किसी भी प्रकार का वित्तीय सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा है। सरकारी सहयोग के अभाव में इन संस्थाओं का वित्तीय प्रबन्ध अति दयनीय है वित्त के अभाव में शैक्षिक संस्थाओं में सुविधाओं का अभाव प्रायः देखा जा सकता है ऐसे असंतुलित पर्यावरण में किस प्रकार के अध्यापक तैयार होंगे, यह एक यक्ष प्रश्न हैं।

अध्यापक शिक्षा की समस्याओं का समाधान

उपरोक्त वर्णित बिन्दुओं के विहंगम अवलोकनोपरान्त इन तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि भारतवर्ष के शैक्षिक संस्थानों में जिस कोटि के शिक्षकों का निर्माण किया जा रहा है वैसे शिक्षकों से देश की भावी पीढ़ी का निर्माण करना तथा भारत को विकसित देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा करना असंभव है। इससमस्या को प्रभावी ढंग से दूर करने के प्रयास करने चाहिए। नीचे कुछ सुझाव दिये जा रहे हैं जिनसे इन समस्याओं को दूर करने में काफी हद तक सहायता मिल सकती है :–

1. सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक विषयों के पाठ्यक्रमों को पुनः व्यवस्थित किया जाना चाहिए।
2. अध्यापक शिक्षा में शिक्षण विधि इस तरह की होनी चाहिए जो छात्राध्यापकों को नवीन अधिगम करा सकें।
3. संगोष्ठी विचार विमर्श संयुक्त शिक्षण, सामूहिक वाद–विवाद तथा कार्यशाला जैसे कार्यो को प्रायोजित किया जाना चाहिए।
4. व्यावसायिक दृष्टिकोण उत्पन्न कर छात्राध्यापकों में व्यवसाय के प्रति निष्ठा विकसित की जानी चाहिए।
5. सामुदायिक, सामाजिक आदि कार्यो हेतु कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।
6. शिक्षण अभ्यास के लिए उचित विद्यालयों का चयन कर उसे विश्वास में लेना चाहिए।
7. विषय वस्तु अध्ययन एवं प्रयोगात्मक कार्य तथा अभ्यासात्मक शिक्षा को इस तरह व्यवस्थित करना चाहिए जिससे स्कूल अभ्यासों में निपुणता प्राप्त की जा सके।
8. अध्यापक–शिक्षा कार्यक्रम में प्रवेश हेतु जो प्रक्रियाएं अपनाई जा रही है उनमें पारदर्शिता लाने के लिए केन्द्रीय स्तर पर प्रवेश क्रिया की व्यवस्था होनी चाहिए।
9. अध्यापक–शिक्षा हेतु शैक्षिक संस्थानों में निश्चित मानकों एवं सुविधाओं का अनुसरण करना चाहिए।
10. अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान को प्राथमिकता देकर उद्देश्यनिष्ठ व्यवहार, तथ्यात्मक आधार तथा निर्देशन के सिद्धान्तों को विकसित करना चाहिए।
11. विश्वविद्यालय एवं शैक्षिक संस्थाओं के बीच अन्तःक्रिया स्थापित करते हुए विशिष्ट विषयों में विनिमय की छूट दी जानी चाहिए इससे अध्यापक–शिक्षा के स्तर में सुधार होता है।
12. अध्यापक–शिक्षा के लिए योग्य एवं अर्हताधारी प्राध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए।
13. सरकार द्वारा समय–समय पर शैक्षिक संस्थाओं का निरीक्षण व वित्तीय सहयोग प्रदान करना चाहिए।
14. अध्यापक शिक्षा हेतु पाठ्यपुस्तकें, सहायक पाठ्य सामग्री, विद्युत सहायक सामग्री की व्यवस्था की जानी चहिए।
15. विश्वविद्यालय में अलग शिक्षा विभाग स्थापित करके अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
16. अध्यापक शिक्षा में कठिन परीक्षण एवं वास्तविक मूल्यांकन की व्यवस्था होनी चाहिए।
17. शैक्षिक संस्थानों में अध्यापक शिक्षा से सम्बन्धित नवाचारों, अनुसंधानों से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाओं की व्यवस्था होनी चाहिए।
18. प्रशिक्षित अध्यापक के नियोजन हेतु सरकार को धनात्मक सोच विकसित करनी चाहिए।
19. समय–समय पर छात्र–अध्यापक को उनके विशिष्ट कार्यो के लिए प्रोत्साहित करने की परम्परा की शुरूआत करनी चाहिए।

निष्कर्ष

यदि अध्यापक–शिक्षा की समस्याओं के समाधान के लिए सुझाए गए उपायों पर तथ्यात्मक रूप से ध्यान दिया जाता है तो निश्चित रूप से अध्यापक–शिक्षा की शिथिलताओं को दूर कर, योग्य, कर्तव्यनिष्ठ, निष्ठावान, तथा राष्ट्र निर्माता अध्यापकों का निर्माण संभव हो सकेगा तथा भारत विश्व शिक्षा मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेगा।

सदंर्भ–

1. डॉ. जी.सी. भटटाचार्य – अध्यापक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2003
2. मालती सारस्वत : भारतीय शिक्षा का विकास और समस्यायें, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
3. लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
4. गुप्ता, डॉ. एस.पी. : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याऐं, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद 1995
5. गिजुभाई बधेका : ऐसे हो हमारे शिक्षक ,गीतांजली प्रकाषन, जयपुर
6. करिकुलम फ्रेमवर्क फार टीचर एजूकेशन : डिस्कशन डाक्यूमेन्ट (1996) एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली।
7. बानो सरताज काजी : विद्यार्थी और शिक्षकों की गुणवत्ता वृद्धि की दिशा में प्रयत्न, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अप्रेल 2002
8. भवालकर, स्मिता : शैक्षिक समस्याएँ एवं सुधार, एक विश्लेषण, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्टूबर 2002
9. भारतीय शिक्षा शोध संस्थान – राष्ट्रीय सेमीनार, शिक्षक सशक्तिकरण, लखनऊ, पृ.सं. 232–238